Roll No. …………………..

MASL–204

नाटक एवं नाटिका

एम. ए. संस्कृत (एम.ए.एस.एल.-12 / 16 / 18)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2018

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. 'मृच्छकटिकम्' के रचयिता शूद्रक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
2. 'मृच्छकटिकम्' के अनुसार चारुदत्त का सोदाहरण चरित्र-चित्रण कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो श्लोकों की व्याख्या कीजिए—

(क) अवन्तिपुर्य्यां द्विजसार्थवाहो युवा दरिद्रः किल चारुदत्तः।
गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसन्तशोभेव वसन्तसेना॥

(ख) सत्यं न मे विभवनाशकृताऽस्ति चिन्ता
भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति।
एतत्तु मां दहति, नष्टधानाश्रयस्य
यत् सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति॥

(ग) कामं प्रदोषतिमिरेण न दृश्यसे त्वं
सौदामिनीव जलदोदरसन्धिलीना।
त्वां सूचयिष्यति तु माल्यसमुद्भवोऽयं
गन्धश्च भीरु! मुखराणि च नूपुराणि॥

(घ) उदयति हि शशाङ्कः कामिनीगण्डपाण्डु
र्ग्रहगणपरिवारो राजमार्गप्रदीपः।
तिमिरनिकरमध्ये रश्मयो यस्य गौराः
स्रुतजल इव पङ्के क्षीरधाराः पतन्ति॥

4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो श्लोकों की व्याख्या कीजिए—

(क) य आत्मबलं ज्ञात्वा भारं तुलितं वहति मनुष्यः।
तस्य स्खलनं न जायते न च कान्तारगतो विपद्यते॥

(ख) पद्मव्याकोशं भास्कारं बालचन्द्रं
वापी-विस्तीर्ण स्वस्तिकं पूर्णकुम्भम्।
तत् कस्मिन् देशे दर्शयाम्यात्मशिल्पं
दृष्ट्वा श्वो यं यद्विस्मयं यान्ति पौराः॥

(ग) यः कश्चित्त्वरितगतिर्निरीक्षते मां
सम्भ्रान्तं द्रुतमुपसर्पति स्थितं वा
तं सर्वं तुलयति दूषितोऽन्तरात्मा
स्वैर्दोपैर्भवति हि शङ्कितो मनुष्यः॥

(घ) भाग्यानि में यदि तदा मम कोऽपराधो
यद्बन्यनाग इव संयमितोऽस्मि तेन।
दैवी च सिद्धिरपि लङ्घयितुं न शक्या
गम्यो नृपो बलवता सह को विरोधः ?॥

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. 'मृच्छकटिकम्' के द्वितीय अंक के कथा का सारांश लिखिए।

2. 'मृच्छकटिकम्' के रचनाकाल पर प्रकाश डालिए।
3. 'मृच्छकटिकम्' में वर्णित रस को अभिव्यक्त कीजिए।
4. 'मृच्छकटिकम्' का रचनाकाल निर्धारित कीजिए।
5. 'रत्नावली' के अनुसार वासवदत्ता का चरित्र-चित्रण स्पष्ट कीजिए।
6. 'रत्नावली' के रचयिता का व्यक्तित्व वर्णन कीजिए।
7. 'रत्नावली' के प्रथम अंक का कथासार लिखिए।
8. 'मृच्छकटिकम्' नाटक एवं 'रत्नावली' नाटिका में राजा के उदात्त भावों का वर्णन कीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

निम्नलिखित चार विकल्पों में से किसी एक सही उत्तर का चयन कीजिए—

1. 'मृच्छकटिकम्' के लेखक है—
   (अ) महाकवि भास
   (ब) कालिदास
   (स) शूद्रक
   (द) चिन्तामणिः

2. 'मृच्छकटिकम्' नाटक में नायक है—

(अ) यौगन्धरायण

(ब) चारुदत्त

(स) रोहसेन

(द) चन्दनक

3. 'मृच्छकटिकम्' नाटक में अंक हैं—

(अ) 05

(ब) 07

(स) 09

(द) 10

4. 'मृच्छकटिकम्' नाटक में नायिका है—

(अ) वसन्तसेना

(ब) रदनिका

(स) मदनिका

(द) चेटी

5. 'मृच्छकटिकम्' के किस अंक में स्वर्णभाण्ड (सोने का बर्तन) चोरी होता है ?

(अ) 01

(ब) 02

(स) 03

(द) 04

6. 'मदनिका' किसकी सखी है ?

(अ) वसन्तसेना

(ब) वासवदत्ता

(स) सागरिका

(द) रदनिका

7. 'मृच्छकटिकम्' के किस अंक में रदनिका चारुदत्त के पुत्र को मिट्टी की गाड़ी देती है ?

(अ) 02

(ब) 04

(स) 06

(द) 08

8. 'रत्नावली' नाटिका में मुख्य नायक है—

(अ) यौगन्धरायण

(ब) वत्सेश्वर

(स) वसन्तक

(द) चन्दनक

9. किसका नाम रत्नावली है ?

(अ) वासवदत्ता

(ब) मदनिका

(स) निपुणिका

(द) सागरिका

10. 'रत्नावली' में सागरिका ने किस अंक में कहा है—'प्रवृत्तमदनमहोत्सवे भगवाननङ्गः'।

(अ) 01

(ब) 02

(स) 03

(द) 04